गंगा पुनरुद्धार जागरुकता सेमिनार

दिनांकः 3-11-2015, समय : 9 बजे प्रातः

स्थानः के.एन. उडुप्पा सभागार, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

मुख्य अतिथि

मि. राजाबाबू सिंह

आईपीएस, आईजी - आईटीबीपी

अध्यक्ष

प्रो. बी. डी. त्रिपाठी

संस्थापक विशेषज्ञ सदस्य : राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण, भारत सरकार

चेयरमैन (WG): **गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय**

मुख्य वक्ता

प्रो. राना पी.बी. सिंह (विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग बी.एच.यू.), **प्रो. यू.के. चौधरी** (पूर्वविभागाध्यक्ष, सिविल इंजिनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. बी.एच.यू.), **मि. पुनीत रस्तोगी** (आईपीएस, आईजी-आइटीबीपी), **मि. नवीन अरोरा** (आईपीएस, डी.आईजी-आइटीबीपी) **मि. एस.आर राय** (आईपीएस, डी.आईजी.आईटीबीपी), **सुरेन्द्र खत्री** (आईटीबीपी) एवं **डॉ.आर.जे. विश्वकर्मा** (आईएमएस बीएचयू)

गंगा पुनरुद्धार जागरुकता सेमिनार के छायाचित्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र एवं भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय कार्यशाला उद्घाटन सत्र के दौरान दीप प्रज्ज्वलन एवं महामना मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा का माल्यार्पण करते हुये अतिथिगण तथा पुलिस बल के जवान, एनसीसी एवं विश्वविद्यालय के छात्र–छात्रायें एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्ता।

प्रस्तावना

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र एवं भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में सीमा पुलिस बल के जवान, विश्वविद्यालय के छात्र–छात्रायें, गंगासेवी जनमानस एवं कार्यकर्ताओं ने अपनी सहभागिता की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मि. राजाबाबू सिंह, आईपीएस, आईजी, आईटीबीपी, अध्यक्ष प्रो. बी. डी. त्रिपाठी, संस्थापक विशेषज्ञ सदस्य एवं राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण, भारत सरकार एवं चेयरमैन, गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. राना पी.बी. सिंह (विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग बी.एच.यू.), प्रो. यू.के. चौधरी (पूर्वविभागाध्यक्ष, सिविल इंजिनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. बी.एच.यू.), मि. पुनीत रस्तोगी (आईपीएस, आईजी–आइटीबीपी), मि. नवीन अरोरा (आईपीएस, डीआईजी–आइटीबीपी), मि. एस.आर. राय (आईपीएस, डीआईजी–आइटीबीपी) व सुरेन्द्र खत्री (आईटीबीपी) आदि लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर.जे. विश्वकर्मा (आईएमएस बीएचयू) ने किया।

कार्यशाला मंथन

प्रो. बी.डी. त्रिपाठी (अध्यक्ष) : कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुये प्रो. बी.डी. त्रिपाठी ने कहा कि आज से करीब 45 वर्ष पूर्व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में किये गये शोध से पता चला कि गंगा का पानी प्रदूषित हो रहा है। उन्होंने ने सेमिनार में विषय प्रवर्तन करते हुये कहा कि गोमुख से निकलकर गंगासागर तक की यात्रा के दौरान गंगा तीन बड़े पारिस्थितिकी तंत्रों (हिमालय, मैदानी भाग, एवं डेल्टा) का निर्माण करती है। सभी पारिस्थितिकी तंत्रों की अलग–अलग समस्यायें एवं उसी के अनुरूप उसका समाधान भी है। गंगा को आज भले ही राष्ट्रीय नदी घोषित कर दिया गया हो, परन्तु अभी तक गंगा पाँच राज्यों उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल, के नियंत्रण में है। प्रत्येक राज्यों का नदी जल के उपयोग तथा प्रबंधन के लिए अपने–अपने नियम हैं। अपने उद्गार में प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि गंगाजल प्रदूषण नियंत्रण हेतु समाज के सभी वर्गों एवं प्रशासनिक स्तर पर बहुत से प्रयास किये गये। परन्तु सरकार गंगा को सिर्फ नदी मानती है और उसके पास गंगा संरक्षण के लिये ठोस योजनाओं को बनाने हेतु आवश्यक आंकड़े उपलब्ध नहीं है और यही उनकी असफलता का प्रमुख कारण है। आज गंगा पर शोध की आवश्यकता है जिससे योजनाओं को बनाने हेतु विश्वसनीय आंकड़ों को प्रस्तुत किया जा सके। हमें ईमानदारी से इसके प्रयास करने होंगे तभी गंगा को संरक्षित किया जा सकेगा। प्रो. त्रिपाठी ने अपने विजुअल प्रजेन्टेशन के जरिये गंगा पर 'ट्रिपल आर' की समस्या को बताया एवं उनके समाधान हेतु 'ट्रिपल पी' की व्याख्या की।

विजुअल प्रजेन्टेशन के माध्यम से गंगा पर 'ट्रिपल आर' की समस्या एवं उनके समाधान हेतु 'ट्रिपल पी' की व्याख्या करते हुये प्रो. बी. डी. त्रिपाठी

1. **प्रो. राणा पी.बी. सिंहः** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राणा पी.बी. सिंह ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण हेतु आम लोगों को जागरूक करना नितान्त आवश्यक है। उन्होंने अपने विदेशी दौरे में गंगा के प्रति विदेशी लोगों की आस्था एवं भावना की चर्चा की। आज भी विदेशो में गंगा के प्रति जो लगाव है उसका अनुभव प्रो. पी.बी. सिंह ने सहभागियों को कराया। प्रो. पी.बी. सिंह ने स्वलिखित एवं गंगा से जुड़ी कुछ अन्य पुस्तकों पर भी चर्चा की।

गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार के दौरान अपने अनुभवों को साझा करते हुये प्रो. राणा पी.बी. सिंह

2. **प्रो. यू.के. चौधरीः** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त व पूर्वविभागाध्यक्ष, सिविल इंजिनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. बी.एच.यू के प्रो. यू.के. चौधरी ने कहा कि गंगा हमारी आस्था ही नहीं बल्कि जीवन से जुड़े हर प्रश्न का उत्तर है और यदि गंगा प्रदूषित हुई या नहीं रही तो हमारा जीवन अनाथों जैसा हो जायेगा। उन्होंने गंगा को हमारे शरीर से तुलना करते हुये कहा कि हमारे विभिन्न अंगों की बीमारी में जिस तरह से डॉक्टर उसे जांच करता है और ठीक करता है उसी तरह से बीमार गंगा के प्रति लोगों को जागरूक होना पड़ेगा।

गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार में गंगा की तुलना मानव शरीर से करते हुये प्रो. यू.के. चौधरी

3. **श्री राजाबाबू सिंह** (मुख्य अतिथि) : कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजाबाबू सिंह, आईपीएस, आईजी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल ने कहा कि हमारी पुलिस के जवानों ने पिछले कुछ दिनों से गंगा के उद्गम स्थान गोमुख से अपने रिवर राफ्टिंग अभियान 2015 के यात्रा के दौरान बहुत से व्यवहारिक अनुभवों को भी देखा है। गंगा प्रदूषण एक गंभीर समस्या है तथा इससे भूजल भी प्रदूषित होता है। राजाबाबू सिंह ने कहा आज धरती के सबसे ऊपरी परत का क्षरण बहुत तेजी से हो रहा है जिसका खामियाजा आगे आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। उन्होंने गंगा के प्रति अपनी गहरी आस्था प्रकट करते हुये कहा कि हमें गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए अपनी सोच को कर्म का रूप भी देना पड़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ मिलकर यह एक अच्छी शुरूआत हुई है भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल की पूरी टीम प्रो. त्रिपाठी जी के साथ मिलकर इस अभियान को और भी तेज एवं वृहद्रूप देगा।

गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार में रिवर राफ्टिंग अभियान के अनुभवों को बताते हुये मुख्य अतिथि श्री राजाबाबू सिंह

4. **मि. पुनीत रस्तोगी :** भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के आईपीएस, आईजी मि. पुनीत रस्तोगी ने रिवर राफ्टिंग अभियान के तहत गंगा प्रदूषण नियंत्रण हेतु अपने एवं अपने जवानों द्वारा किये गये प्रयासों की चर्चा करते हुये कहा यदि प्रदूषण नियंत्रण हेतु बनाये गये नियमों का पालन सरकार एवं सामाजिक व्यक्तियों द्वारा किया जाये तो गंगा को प्रदूषण से मुक्त किया जा सकता है। खास तौर पर युवावर्ग एवं बच्चों में गंगा के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु हमारी टीम पूरी तरह से लगी हुई है। उन्होंने अपने उद्गार प्रकट करते हुये कहा आज लोगों में गंगा के प्रति लगाव में कमी आयी है यही कारण है कि गंगा का प्रदूषण नहीं रूक रहा है। आये हुये प्रतिभागियों की जागरूकता को देखते हुये उन्होंने कहा कि इसमें युवावर्ग की सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि गंगा से जुड़े सभी समस्याओं के समाधान हेतु सोशल मीडिया एवं आधुनिक डिजिटल तकनीकी का भी प्रयोग किया जाना चाहिये। साथ ही साथ प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को संस्कार के रूप में डाला जाना चाहिए।

गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार में युवावर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका को बताते मि. पुनीत रस्तोगी

5. **मि. नवीन अरोरा :** भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल के आईपीएस, डीआईजी मि. नवीन अरोरा ने गंगा प्रदूषण नियंत्रण सेमिनार में धन्यवाद ज्ञापन करते हुये कहा कि यह सेमिनार गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सहयोग के बिना होना असम्भव था. उन्होंने सभी अतिथियों के साथ ही सेमिनार में उपस्थित सभी सहभागियों का धन्यवाद देते हुये कहा कि गंगा को बचाना है तो सम्मिलित प्रयास की सख्त जरूरत होगी।

गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार में धन्यवाद ज्ञापन करते हुये मि. नवीन अरोरा

6. **डॉ आर.जे. विश्वकर्मा** : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान के डॉ आर.जे. विश्वकर्मा ने **गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार** का संचालन करते हुये कहा कि गंगा प्रदूषण नियंत्रण का अभियान चलाना पड़ेगा तब जाकर सफलता मिलेगी।

गंगा पुनरूद्धार जागरूकता सेमिनार का संचालन करते हुये डॉ आर.जे. विश्वकर्मा

सहभागिता

आइटीबीपी – सुरेन्द्र तथा द्विवेदी जी एवं उनकी टीम और एनसीसी के छात्र।

बीएचयू – सी. शेखर, मनीष सिंह, संदीप राजभर एवं विश्वविद्यालय के छात्र-छात्रा।

सेमिनार के प्रमुख छायाचित्र